



मुच्छिष्ट गणपति मन्त्रः

अस्यश्री मुच्छिष्ट गणपति मन्त्रस्य गणक ऋषिः गायत्री छन्दः श्री
मुच्छिष्ट गणपतिर्देवता आं बीजं क्रों शक्तिः स्वाहा कीलकं श्री उन्मत्त
विनायक प्रीत्यर्थे जपे (हवने) विनियोगः

| | |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>कर न्यासः ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः हस्तिमुखाय तर्जनीभ्यां नमः लंबोदराय मध्यमाभ्यां नमः उच्छिष्ट महात्मने अनामिकाभ्यां नमः आं क्रों ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः गं घे घे स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः</p> | <p>हृदयादि न्यासः ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय हृदयाय नामः हस्तिमुखाय शिरसे स्वाहा लंबोदराय शिखायै वषट् उच्छिष्ट महात्मने कवचाय हुं आं क्रों ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् गं घे घे स्वाहा अस्त्राय फट्</p> |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

ॐ भूर्भुवस्वरोम् इति दिग्बन्धः

ध्यानं ॐ शरांधनुः पाशसृणी स्व हस्तैः दधानमारक्तसरोरुहस्तं

विवस्त्रपत्यां सुरत प्रवृत्तं मुच्छिष्ट मंबासुतमाश्रयेऽहं

मन्त्रः ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय हस्तिमुखाय लंबोदराय उच्छिष्ट
महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे स्वाहा

गायत्री मन्त्रः ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्र तुण्डाय धीमही तन्नो
दन्तीप्रचोदयात्